खेतड़ी ठिकाना : आर्थिक–न्यायिक व्यवस्था

डॉ0 सपना चौहान

खेतड़ी ठिकाने को विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होती थी। भू–राजस्व ठिकाने की आय का मुख्य स्रोत था। इसके अतिरिक्त जकात (कस्टम), एक्साइज, खान, जंगलात, नजराना, लाग–बाग आदि से भी ठिकाने को पर्याप्त आय होती थी। विभिन्न स्रोतों से होने वाली आय की मात्रा निश्चित नहीं थी। भू–राजस्व से ठिकाने को सम्पूर्ण आय का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा प्राप्त होता था। खेतड़ी ठिकाने में एक्साइज अर्थात आबकारी से भी आय होती थी। एक्साइज एक प्रकार का कर था जो मादक वस्तुओं और शराब पर लगाया जाता था। ठिकाने में गांजा, भांग, अफीम, और शराब आदि अनेक प्रकार के मादक पदार्थ नशे के लिये प्रयुक्त किये जाते थे।

खेतड़ी ठिकाने का प्रशासन पिरामिड के अनुसार गठित किया गया था। पिरामिड के शीर्ष पर ठिकाने का शासक अर्थात् राजा होता था और फिर उसके नीचे उनके परामर्शी एवं विभागाध्यक्षों के होते हुये नियन्त्रण का सूत्र नीचे सबसे छोटे कर्मचारी तक जाता था। इससे प्रशासन के आधुनिक आवश्यक सिद्धान्त आदेश की एकता का पालन हो जाता था। ठिकाने के केन्द्र बिन्दु अर्थात् शासक को इजलास खास के नाम से जाना जाता था।

ठिकाने की भू राजस्व प्रणाली भी व्यवस्थित थी। खेतड़ी ठिकाने में प्रारम्भिक शासकों के समय ठिकाने में राजस्व निर्धारण की सर्व प्रचलित पद्धत्ति 'कनकूंत' और इजारा प्रथा थी। प्रचलित दूसरे प्रकार की प्रणाली ठेका अर्थात् इजारेदार व्यवस्था थी। इस पद्धत्ति में ठिकाने द्वारा लगान वसूली का ठेका छोड़ा जाता था। सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को ठेका दिया जाता था। दोनों ही प्रणालियों में काश्तकार और ठिकानेदार दोनों को हानि और परेशानी उठानी पड़ती थी।